RNI No.: DEL/BIL/2004/14598

Youngster

YOUNGSTER · ESTABLISHED 2004 · NEW DELHI · OCTOBER 2020 · PAGES 4 · PRICE 1/- · MONTHLY BILINGUAL (HIN./ENG.)

नवीकरणीय ऊर्जा से चमकने के लिए तैयार हो रहा है नया भारत

मोदी सरकार के छह वर्षीय कार्यकाल ने भारत में नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है। भारत इस क्षेत्र का सबसे बड़ा और पसंदीदा देश बनकर निवेशकों को आकर्षित कर रहा है। प्रधानमंत्री मोदी के आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार करने में नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र अहम आधार के रूप में भी स्थापित हो रहा है। 26 नवम्बर को भारत तीसरे ष्वैश्विक नवीकरणीय ऊर्जा निवेश बैठक और एक्सपोष (रीइन्वेस्ट 2020) का आयोजन करने जा रहा है जिसका शुभारंभ प्रधानमंत्री मोदी करेंगे। इस वर्चुअल समिट में 80 से अधिक देशों के नवीकरणीय पणधारक (स्टेकहोल्डर्स) भाग ले रहे हैं। 2014 में मोदी सरकार आने के बाद से नवीकरणीय ऊर्जा को जीवाश्मीय ऊर्जा स्रोतों का विकल्प बनाने पर उच्च प्राथमिकता से काम हो रहा है। आज भारत की कुल ऊर्जा उत्पादन क्षमता में 36 प्रतिशत अक्षय ऊर्जा की हिस्सेदारी है। बीते छह वर्षों में यह ढाई गुना बढ़ी है और इसमें सोलर की हिस्सेदारी तो 13 गुना तक बढ़ी है। ऊर्जा मंत्री आरके सिंह ने दावा किया है कि 2030 तक भारत में अक्षय ऊर्जा की भागीदारी 40 प्रतिशत और 2035 तक 60 फीसदी होगी। यह आंकड़ा भारत में स्वच्छ ऊर्जा की एक नई क्रांति जैसा ही होगा।

इसे भी पढ़ेंरू भारतीय अर्थव्यवस्था में बहुत तेजी से आ रहे हैं कई सकारात्मक बदलाव

31 अक्टूबर 2020 के आंकड़े अनुसार 373436 मेगावाट के कुल राष्ट्रीय बिजली उत्पादन में नवीकरणीय स्रोतों की भागीदारी 89636 मेगावाट है। मोदी सरकार ने 2022 तक 175 गीगावाट और 2035 तक 450 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन करने का लक्ष्य निर्धारित किया है (एक गीगावाट मतलब 1000 मेगावाट)। सरकार के मिशन मोड़ वाले प्रयासों से छह साल में आया 4.7 लाख करोड़ का निवेश भविष्य के भारत की झलक भी दिखलाता है। गुजरात, मप्र, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, तमिलनाडु, हिमाचल प्रदेश जैसे राज्य अगले कुछ वर्षों में नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र के अग्रणी राज्यों में होंगे क्योंकि इन राज्यों में सोलर क्रांति की जमीन राज्य और निजी निवेशकों के जरिये बहुत ही सुव्यवस्थित तरीके से निर्मित की जा रही है। मप्र के रीवा में बनाये गए अल्ट्रा मेगा पार्क में 700 मेगावाट बिजली का उत्पादन हो रहा है यह एशिया का सबसे बड़ा एकल सोलर पार्क है जिसे दो साल से कम में तैयार किया गया है। रीवा सोलर परियोजना की 26 फीसदी बिजली दिल्ली मैट्रो को दी जाती है। इसी तरह यूपी के मिर्जापुर, गुजरात की कच्छ, धोलेरा, तमिलनाडु की कामुती, राजस्थान की मथानिया, खींवसर और हिमाचल की ऊना, बिलासपुर, कांगड़ा जैसी महत्वपूर्ण सोलर परियोजनाओं के जरिये देश भर में सौर ऊर्जा उत्पादन की स्वर्णिम कहानी इस समय लिखी जा रही है।

अक्षय ऊर्जा के अन्य घटक पवन, बायो, पनबिजली की परियोजनाओं पर मोदी सरकार की प्रामाणिक प्रतिबद्धता से यह स्पष्ट है कि 2035 से पहले भारत नवीकरणीय ऊर्जा के सभी लक्ष्य हासिल कर लेगा।

अक्षय ऊर्जा के जरिये भारत वैश्विक पर्यावरणीय संकट के समाधान में भी निर्णायक भूमिका निभा रहा है। नजीर के तौर पर अकेले रीवा अल्ट्रा मेगा सोलर परियोजना से 15.7 लाख टन कार्बन डाईऑक्साइड का उत्सर्जन रोका गया है। यह धरती पर 2.60 करोड पेड़ लगाने के बराबर है। भारत में नवीकरणीय और नवीन ऊर्जा की अपरिमित सँभावनाए हैं और अगर सब कुछ इसी गति से अमल में लाया जाता है तो भारत 2035 में 450 गीगावाट बिजली उत्पादन के लक्ष्य को समय से पूर्व ही प्राप्त करके पूरी दुनिया में एक मिसाल कायम करेगा। सतत विकास लक्ष्य और पैरिस समझौते के उद्देश्यों को पूरा करने की दिशा में आने वाले समय में भारत विश्व का नेतृत्व करने के लिए ठोस कार्ययोजना पर समयबद्ध तरीके से आगे बढ़ रहा है इसका श्रेय निःसन्देह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को जाता है। मोदी की पहल पर ही फ्रांस के सहयोग से श्अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधनश की नींव रखी गई है जिसके साथ 121 देश एकजुट होकर गैर जीवाश्मीय ऊर्जा स्रोतों के उपयोग पर समवेत हैं।

इसे भी पढ़ेंरू मोदी सरकार आने के बाद भारत में ऊर्जा के क्षेत्र में हुई जोरदार क्रांति

सौर गठबंधन का उद्देश्य 2030 तक विश्व में 1 ट्रिलियन वाट यानी 1000 गीगावाट उत्पादन का लक्ष्य रखा गया है। वस्तुतः जलवायु परिवर्तन के अवश्यंभावी संकट से निबटने के लिए जो प्रतिबद्धता भारत ने व्यक्त की है वह भारत की विश्व दृष्टि की उद्घोषणा का हिस्सा ही है। भारतीय दृष्टि प्रकृति के शोषण के स्थान पर दोहन की हामी है और प्रधानमंत्री मोदी ने जिस प्रभावशाली तरीके से दुनिया के सामने सौर गठबंधन का प्रकल्प खड़ा किया है वह पैरिस समझौते के समानन्तर सही मायनों में भारतीय लोकमंगल की परिकल्पना का ही साकार है। श्अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधनश और इसके उद्देश्य भारत की आत्मनिर्भर अवधारणा का ब्ल्यू प्रिंट भी हैं क्योंकि हमारी अर्थव्यवस्था का जिस अनुपात में आकार बढ़ रहा है उसकी बुनियाद ऊर्जा केंद्रित ही है ऐसे में अक्षय ऊर्जा पर निर्भरता आत्मनिर्भरता की राह भी बनायेगी। भारत में औसतन 300 दिन सूरज प्रखरता के साथ आसमान पर रहता है और हमारे भूभाग पर पांच हजार लाख किलोवाट घण्टा प्रति वर्ग मीटर के बराबर सौर ऊर्जा आती है। एक मेगावाट सौर ऊर्जा के लिए तीन हैक्टेयर समतल भूमि की आवश्यकता होती है। इस लिहाज से भारत के पास इस क्षेत्र में अपरिमित सँभावनाओं का खजाना है।

मोदी सरकार ने इस शाश्वत ऊर्जा भंडार को देश की ऊर्जा आवश्यकताओं से जोड़कर जो लक्ष्य तय किये हैं वह एक सपने को साकार करने जैसा ही है। प्रधानमंत्री इसे श्योर, प्योर और सिक्योर कहते हैं क्योंकि सूरज सदैव चमकना है, इससे उत्पादित ऊर्जा पूरी तरह स्वच्छ है, यह हमारी जरूरतों को पूरी करने में सुरक्षित है। इस त्रिसूत्रीय फार्मूले पर केवल भाषणों में काम नहीं हुआ बल्कि पहली बार धरातल पर परिवर्तन की इबारत लिखी जा रही है। 2016 में पवन ऊर्जा की प्रति यूनिट लागत 4.18 रुपए थी जो 2019 में 2.43 हो गई। 4.43 की दर वाली सौर यूनिट 2.24 रुपये पर आ गई है। 2013 में नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन 34000 मेगावाट था जो आज 89636 पर आ चुका है। पूरी दुनिया में भारत तीसरा शीर्ष नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादक देश है। 2030 तक भारत में जीवाश्मीय ऊर्जा खपत काफी कम होने का अनुमान है जो जलवायु परिवर्तन के लिए कार्बन उत्सर्जन की बुनियादी आवश्यकता को पूरा करने वाला सबसे बड़ा कारक है।

प्रधानमंत्री मोदी ने आत्मनिर्भरता के मोर्चे पर भी बड़े बुनियादी कदम उठाए हैं क्योंकि यह तथ्य है कि नवीकरणीय ऊर्जा के 80 फीसदी उपकरण हमें चीन से मंगाने पड़ते हैं। सौर ऊर्जा के सस्ते मॉड्यूल से भारतीय बाजार पटे हुए हैं। चीन में विभिन्न उपकरण निर्माता कम्पनियों ने 39 हजार 784 आइटम के पेटेंट करा रखे हैं वहीं भारत में इनकी संख्या केवल 246 ही है। मोदी सरकार ने राष्ट्रीय सोलर मिशन लागू कर स्वदेशी कम्पनियों को आगे बढ़ाने वाले आर्थिक एवं नीतिगत पैकेज पर काम आरम्भ किया है। सरकार का दावा है कि उसकी नीतियों के चलते सोलर मॉड्यूल और पैनल विनिर्माण क्षेत्र में 2030 तक भारत आत्मनिर्भरता को हासिल कर लेगा और इस दौरान 42 अरब डॉलर के आयात चीन से नहीं करने पड़ेंगे। भारत का अब तक का सबसे बड़ा सोलर सेल परियोजना ठेका हासिल करने वाले गौतम अडानी का कहना है कि अगले 4 से 5 साल में भारत के नवीकरणीय ऊर्जा बाजार से हम चीन को बाहर कर देंगे। यह स्थिति समेकित रूप से भारतीयों को रोजगार से जोड़ने के साथ ऊर्जा आत्मनिर्भरता के बड़े लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक है। एक अनुमान के अनुसार 2035 तक भारत में ऊर्जा की मांग 4.2 प्रति वर्ष की दर से बढ़ेगी जो पूरी दुनिया में सबसे तेज होगी। विश्व के ऊर्जा बाजार में 2016 में भारत की मांग पांच प्रतिशत थी जो 2040 में 11 फीसदी होने का अनुमान है। इन तथ्यों से समझा जा सकता है कि मोदी सरकार ने दूरदर्शिता के साथ भारत की आर्थिकी को मजबूत धरातल देने का कितना महत्वपूर्ण काम अपने हाथ में ले रखा है।

अफ्रीका जा रहे हैं घूमने तो वहां पर यूनोस्को की विश्व धरोहर स्थलों को जरूर देखें

पूरे विश्व में, यूनेस्को के सैकड़ों विश्व धरोहर स्थल हैं। ये हमारे समाज के लिए बेहद महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि इन्हें आने वाली पीढि–यों के लिए सुरक्षित रखा गया हैं। अकेले अफ्रीका में ही 89 विरासत स्थल हैं जो दुनिया की कुछ सबसे आकर्षक विश्व धरोहर स्थलों में शामिल है। तो चलिए आज हम आपको अफ्रीका की कुछ बेहतरीन यूनोस्को की वर्ल्ड हेरिटेज साइट्स के बारे में बता रहे हैं, जिनके बारे में शायद अब तक भी आपको जानकारी ना हो–

लालिबेला के रॉक-हेवन चर्च, इथियोपिया

उत्तरी इथियोपिया में लालिबेला शहर का सुदूर पहाड़ी गाँव 11 शानदार मध्ययुगीन चर्चों का घर है और इन्हें एक ही चट्टान से बनाया गया है। इन रहस्यवादी कृतियों ने इस पर्वतीय शहर को उपासकों और आगंतुकों के लिए गौरव और तीर्थ के रूप में बदल दिया है। ये चर्च एक निर्माण परंपरा का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसका उपयोग 6 वीं शताब्दी से इथियोपिया में किया जाता रहा है। इन विशेष चर्चों का श्रेय राजा लालिबेला को दिया जाता है, जिन्होंने 13 वीं शताब्दी में शासन किया था। यहां जाने का सबसे अच्छा समय टिम्मेट के दौरान है। यह जनवरी में मनाया जाने वाला एक बेहद खास त्यौहार है।

माउंट किलिमंजारो, तंजानिया

माउंट किलिमंजारो, अफ्रीका का सबसे ऊँचा स्थान है, जो आसपास के मैदानों के ऊपर बर्फीली चोटी के साथ खड़ा है। पहाड़ जंगलों से घिरा हुआ है, और महाद्वीप पर पाए जाने वाले कुछ सबसे अद्भुत जानवर हैं। किलिमंजारो के पर्वतारोहियों को आस–पास के सवाना और आकर्षक ग्लेशियरों और प्रभावशाली बर्फ की चट्टानों के विस्मयकारी नजारें देखने का मौका मिलता है।

प्राचीन थेब्स, मिस्र

यदि आप मिस्र के कुछ वास्तविक इतिहास को देखना चाहते हैं, तो बस लक्सर शहर से दक्षिण की ओर जाएं। यहां पर आपको यूनेस्को साइट प्राचीन थेल्स को देखने का मौका मिलेगा। लक्सर कभी प्राचीन मिस्र की राजधानी थी, लेकिन आज इसे दुनिया के सबसे बड़े ओपन–एयर संग्रहालय के रूप में जाना जाता है। लक्सर और सेटी के राजसी मंदिर परिसरों में शानदार सूर्यास्त का दृश्य होता है। खंडहरों का दौरा करने के बाद, शाम को आप कर्णक मंदिर के साउंड शो में भाग जरूर लें।

महान जिम्बाब्वे, जिम्बाब्वे

एक बार एक प्राचीन व्यापारिक साम्राज्य की राजधानी, ग्रेट जिम्बाब्वे दक्षिण–पूर्वी पहाडियों में पाया जाता है जो अब जिम्बाब्वे का देश है। भले ही ये खंडहर अफ्रीका में अन्य यूनेस्को साइटों के रूप में आश्चर्यजनक नहीं हैं, लेकिन वे मान्यता के योग्य हैं।

वेब डिजाइनिंग के क्षेत्र में आजमाएं भविष्य और बनें आत्मनिर्भर

सूचना क्रांति का जिस क्षेत्र ने सर्वाधिक लाभ उठाया है, उनमें से एक है वेब डिजाइनिंग की फील्ड! डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू, यानी वर्ल्ड वाइड वेब नामक क्रांति ने दुनिया को बदल कर रख दिया है। एक वेबसाइट दुनिया में क्या बदलाव ला सकती है इसे बखूबी दिखलाया है गूगल ने, इसे बखूबी दिखलाया है अमेजन ने, इसे बखूबी दिखलाया है फेसबुक जैसी वेबसाइट ने और ऐसे अनगिनत नाम हैं इस दुनिया में।

आप चाहे विकिपीडिया का नाम लें, चाहे फ्लिपकार्ट कहें, चाहे न्यूज की दूसरी वेबसाइट का उद्धरण दें, इसने नए युग में नई क्रांति को जन्म दिया है। छोटा बिजनेस हो, बड़ा बिजनेस हो, किसी आम या खास इंडस्ट्री से संबंधित कंटेंट की वेबसाइट हो, सामान की डिलीवरी हो या फिर कोई और काम, लोगों की जिंदगी में एक वेबसाइट ने आमूलचूल परिवर्तन लाया है।

वस्तुतः यह कहने में हमें संकोच नहीं होना चाहिए कि शिक्षा तक की ट्रेडिशनल पद्धति को वेबसाइटों ने ना केवल बदला है, बल्कि इसकी बुनियाद को बदलने मेंभी अहम भूमिका निभाई है।

अब जरा सोचिए! अगर इसका प्रभाव इतना व्यापक है तो इस फील्ड में कार्य करने वाले लोग भला महत्वपूर्ण क्यों नहीं होंगे? सच बात तो यह है कि वेब डिजाइनर पिछले कई दशकों से महत्वपूर्ण बने हुए हैं और आज भी इनका महत्व कम नहीं हुआ है। वेब डिजाइनिंग में आप सामान्य एचटीएमएल वेबसाइट से लेकर, स्टैटिक ऑपरेशन एवं डायनेमिक बिहेवियर वाली वेबसाइट बनाते हैं और उसकी सहायता से अपने कस्टमर को लाभ भी पहुंचाते हैं।

वेब डिजाइनिंग के कई भाग हैं। आइए जानते हैं-

डिजाइनिंग पार्ट किसी वेबसाइट का ले आउट कैसा रहना चाहिए, इसका यूजर इंटरफेस किस डिजाइन से बेहतर होगा, इसे डिसाइड करने के लिए आप इसकी स्केचिंग करते हो। साथ में किसी सॉफ्टवेयर में इसका प्रोटोटाइप भी बनाते हो। कई लोग इसे तकनीकी लैंग्वेज में पीएसडी बनाना भी बोलते हैं। यहां डिजाइन फाइनल होती है और उसके बाद ही अगले स्टेप की तरफ कोई बढ़ता है।

अगर आप इस क्षेत्र में कॅरियर बनाना चाहते हैं तो एडोबी का फोटोशॉप, इलस्ट्रेटर, कोरल ड्रा जैसे सॉफ्टवेयर में आपको सिद्धहस्त होना चाहिए। इसे आप एक लेवल पर ग्राफिक डिजाइनर भी बोल सकते हैं और आप जितनी बेहतरीन डिजाइन बनाएंगे, वेबसाइट उतनी ही शानदार तरीके से तैयार होगी। इस फील्ड में उपरोक्त सॉफ्टवेयर की महारत रखने वाले लोग न केवल वेबसाइट का लेआउट बनाते हैं बल्कि लोगो से लेकर तमाम इमेज वर्क भी इनके हाथ में होता है।

एचटीएमएल, सीएसएस की जानकारी

इसे फ्रंट एंड कोडिंग भी बोल सकते हैं। मतलब सामने वेबसाइट जो दिखती है, उसकी कोडिंग। ब्राउजर में जब आप कोई भी यूआरएल डालते हैं तो जो फ्रंट एंड नजर आता है वह एचटीएमएल पर चलता है। एचटीएमएल मतलब हाइपरटेक्स्ट मार्कअप लैंग्वेज। इसके कई वर्जन आ चुके हैंऔर हाल–फिलहाल एचटीएमएल– 5 पर कार्य हो रहा है।

इसी प्रकार एचटीएमएल को खूबसूरत बनाने का काम करती है स्टाइलशीट जिसको सीएसएस (कैस्केडिंग स्टाइल शीट) बोलते हैं। यह दोनों कोडिंग लैंग्वेज ही होती हैं और इन्हें

आप एक तरह से स्क्रिप्टिंग भी बोल सकते हैं।

वेबसाइट डिजाइन करने में जावास्क्रिप्ट भी यूज होती है, जो खासकर इवेंट के लिए प्रयोग की जाती है। जैसे माउस क्लिक करने पर क्या एक्शन होना चाहिए, माउस रोलओवर करने पर क्या एक्शन होना चाहिए, स्क्रोलिंग पर क्या एक्शन होना चाहिए, यह कार्य जावास्क्रिप्ट करती है।

इसकी जानकारी आपको एचटीएमएल, सीएसएस, जावास्क्रिप्ट में मिलती है। सामान्य तौर पर इसे आसान कोडिंग लैंग्वेज कहा जाता है और आप इसमें भी महारत हासिल कर सकते हैं।

कोडिंग जोन यह ऐसा क्षेत्र है जो असली प्रोग्रामिंग की दुनिया में बदलाव लाता है। एक सामान्य वेबसाइट और गूगल में क्या अंतर है यह डिफाइन करता है कि इसमें कोडिंग किस स्तर की हुई है?

एक सामान्य एचटीएमएल वेबसाइट और फेसबुक में क्या अंतर है, एक सामान्य वेबसाइट और अमेजन में क्या अंतर है, यह कोडिंग डिसाइड करती है। कहने का तात्पर्य यह है कि मनुष्य ऊपर से जैसा भी दिखता हो, किंतु उसके मस्तिष्क में कितनी नसें हैं ब्लड सर्कुलेशन किस प्रकार होता है यह आप प्रोग्रामिंग समझ सकते हैं।

कोडिंग लैंग्वेज किसी भी वेबसाइट को नियंत्रित करती है। वह वेबसाइट चाहते गूगल जैसा कोई सर्च इंजन हो, फेसबुक जैसा कोई सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म हो या फिर फ्लिपकार्ट जैसी कोई शॉपिंग वेबसाइट हो, कोडिंग ही यह तमाम चीजेंतय करती है।

इसमें पीएचपी से लेकर जावा और एएसपी से लेकर पाइथन और सी प्लस प्लस जैसी हेवी लैंग्वेज होती हैं जिसके ऊपर कोई भी फंक्शन कार्य करता है। इसमें अगर आप महारत हासिल करते हैं तो वेबसाइट में बड़ी–बड़ी फंक्शनैलिटी ऐड कर सकते हैं नयी खोज कर सकते हैं।

कॅरियर की बात करें तो, गूगल–फेसबुक जैसी बड़ी कंपनियों में इंजीनियर के पद पर आप मोटी सैलरी भी उठा सकते हैं या फिर अपना कोई स्टार्टअप शुरू कर सकते हैं।

वेब कंसलटेंसी अगर आप ऊपर में से तीन चीजों में से कुछ नहीं करते हैं तो भी आपको निराश होने की जरूरत नहीं है। आप तमाम सीएमएस में से किसी एक सीएमएस में महारत हासिल करके लोगों को कंसल्टेंसी दे सकते हैं। बहुत सारी ऐसी कंपनियां हैं जो ड्रैग एंड ड्रॉप पर चलती हैं किंतु लोगों को उसकी जानकारी नहीं होती है।

जैसे वर्डप्रेस, ब्लॉगर, टंबलर इत्यादि।

तो किस प्रकार से कोई वेबसाइट बनती है, कार्य करती है, आपको इसकी जानकारी देनी होती है, जो सामान्यतः उसके ट्यूटोरियल में दिया भी होता है। इसे आप यूट्यूब से भी स्टेप बाय स्टेप सीख सकते हैं और अच्छा खासा पैसा भी कमा सकते हैं।

ऊपर की चीजें ऐसी हैं जो आप फुल टाइम कर सकते हैं और अच्छी खासी अर्निंग कर सकते हैं। इसके साथ ही आपको डोमेन, होस्टिंग की भी जानकारी रखनी होती है, क्योंकि अगर आप यह कार्य करते हैं तो फिर एक संपूर्ण पैकेज के तौर पर अपने कॅरियर में चार चांद लगा सकते हैं।

THIS MONTH

October 5, 1964 - The largest mass escape since the construction of the Berlin Wall occurred as 57 East German refugees escaped to West Berlin after tunneling beneath the wall.

*****

October 5, 1986 - Former U.S. Marine Eugene Hasenfus was captured by Nicaraguan Sandinistas after a plane carrying arms for the Nicaraguan rebels (Contras) was shot down over Nicaragua. This marked the beginning of the "Iran-Contra" controversy resulting in Congressional hearings and a major scandal for the Reagan White House after it was revealed that money from the sale of arms to Iran was used to fund covert operations in Nicaragua

*****

October 6, 1927 - The first "talkie" opened in New York. *The Jazz Singer* starring Al Jolson was the first full-length feature film using spoken dialogue.

*****

October 6, 1928 - Generalissimo Chiang Kai-shek became president of the Republic of China upon the introduction of a new constitution.

*****

October 6, 1949 - "Tokyo Rose" (Iva Toguri d'Aquino) was sentenced in San Francisco to 10 years imprisonment and fined $10,000 for treason. She had broadcast music and Japanese propaganda to American troops in the Pacific during World War II. She was pardoned by President Gerald Ford in 1977.

Compilation:
Honey Shah

BASICS OF MEDIA

Program Speaker: A loudspeaker in the control room that carries the program sound. Its volume can be controlled without affecting the actual line-out program feed. Also called audio monitor.

*****

Studio Talkback: A public address loudspeaker system from the control room to the studio. Also called S.A. (studio address) or P.A. (public address) system.

*****

System: The interrelationship of various elements and processes whereby the proper functioning of each element is dependent on all others.

*****

House Number: The in-house system of identification for each piece of recorded program material. Called the house number because the code numbers differ from station to station (house to house).

*****

Tapeless System: Refers to the recording, storage, and playback of audio and video information via computer storage devices rather than videotape.

*****

To Be Continued In Next Issue-

Compilation:
Rahul Mittal

संपादक की कलम से

बढ़ रही है स्मार्टनेस

यह तो बहुत खुशी की बात है कि न्यू इंडिया में रहने वाले नयों के साथ पुराने लोगों की जिंदगी में स्मार्टनेस बढती जा रही है। स्मार्ट शहरों के चप्पेचप्पे में रोप दी गई स्मार्टनेस ने गांवों की गलियों में भी चुस्ती उगा दी है। 'हर चीज की अधिकता बुरी होती है' जैसी कही गई बातें अब पुरानी लगती हैं। लेकिन इसे अच्छी बात मान कर, अगर मान लिया जाए तो यह सच लगता है कि आधुनिक जीवन के लिए बेहद जरूरी चीज स्मार्टनेस, अब कुछ ज्यादा ही बढ़ चुकी है। क्या स्मार्टनेस अब यूटर्न लेकर अपने घर लौटना चाहती है। उधर सामने से आ रही ताजा खुशबू वाली नकली बुद्धि इंसानी दिमाग पर पूरी तरह कब्जा करने के चक्कर में बेकरार हुई जा रही है और इधर परम आदरणीय विकासजी की प्रेरणा से हम फिर से मिटटी के बर्तनों में भोजन पकाना और खाना अपनाने लगे हैं। देश में अंतर्राष्ट्रीय स्तर के डिजाइन वाले कपड़े बनाए जा रहे हैं और माल में लोग ऐसे स्मार्ट कपड़े पहन कर विचरते देखे गए हैं मानो अपने बैड रूम से उठकर आ गए हों। वैसे भी मॉल अब बाग की तरह हो गया है जहां आकर स्वास्थ्य सुधर जाता है और दिल बाग बाग हो जाता है। आनलाइन स्वाद मंगाकर, खाकर इतने स्मार्ट हो गए हैं कि सोशल मिडिया पर सुबह से रात तक बतियाते हैं लेकिन पास से गुजर रहे हों तो वक्त की जबर्दस्त कमी के कारण बिना बात किए स्मार्टली खिसक रहे हैं। अतिस्मार्टनेस राष्ट्रीय हित योजना के अंतर्गत कोई भी किसी से पिट सकता है और हिम्मत हो तो पीट भी सकता है। धार्मिक चुस्ती स्कीम के अनुसार एक सभ्य इंसान दूसरे इंसान को जानवर से बदतर समझ सकने का मौलिक अधिकार रखने लगा है। ओवर स्मार्टनेस सुविधा के अंतर्गत तनरंजन और मनोरंजन बढ़ता जा रहा है और सामाजिक समस्याएं स्मार्टली गायब होती जा रही हैं। शरीर के चौबीस घंटे जागने वाले हिस्से, स्मार्टफोन ने हर उम्र पर अपना सिक्का जमा लिया है। एक तरफ इसका प्रयोग बढ़ रहा है और दूसरी तरफ देश के न्याय स्तम्भ फीचर फोन की दुनिया में लौटना चाहते है। क्या यह एंटी स्मार्टनेस कार्यशैली है। बढती उम्र के साथ पुरानी चीजों के प्रति आकर्षण बढ़ता ही जाता है। कहीं हम में से कुछ लोगों को वहम तो नहीं हो रहा कि हमारी भगदड़युक्त जीवन शैली को पीछे लौटने की जरूरत है। सोशल मिडिया अति ओवर स्मार्ट हो चुका है, उसे समझाया जा चुका है किसका नुकसान करने से किसका फायदा होगा। जिन्दगी फर्जी खबर की मानिंद होती जा रही है लेकिन उसे झूठ साबित करने का हुनर सबके पास नहीं है। राजनीतिक स्मार्टनेस के कारण हर सफलता के मंगल की फिक्र हो रही है लेकिन स्वास्थ्य के चन्द्रमा पर पड़े खड्डे बेहतर डिजिटल तकनीक के कारण दिखते नहीं। यह शब्दों की स्मार्टनेस ही तो है कि बहुत लोग दिल से खुश नहीं हैं लेकिन शरीर से सब सहमत हैं। सुना है अब मानवीय संबंध पूरी तरह से व्यवसायिक हो चुके हैं और वहां व्यवसायियों को समझाया जा रहा है कि भावना भी कोई चीज होती है। मित्रों सावधान! जमाना बदल चुका है, अब कम स्मार्ट लोगों के लिए नई बस्ती में जगह कम होती जा रही है।

नवीकरणीय ऊर्जा से चमकने के लिए तैयार हो रहा है नया भारत

मोदी सरकार के छह वर्षीय कार्यकाल ने भारत में नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है। भारत इस क्षेत्र का सबसे बड़ा और पसंदीदा देश बनकर निवेशकों को आकर्षित कर रहा है। प्रधानमंत्री मोदी के आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार करने में नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र अहम आधार के रूप में भी स्थापित हो रहा है। 26 नवम्बर को भारत तीसरे ष्वैश्विक नवीकरणीय ऊर्जा निवेश बैठक और एक्सपोष (रीइन्वेस्ट 2020) का आयोजन करने जा रहा है जिसका शुभारंभ प्रधानमंत्री मोदी करेंगे। इस वर्चुअल समिट में 80 से अधिक देशों के नवीकरणीय पणधारक (स्टेकहोल्डर्स) भाग ले रहे हैं। 2014 में मोदी सरकार आने के बाद से नवीकरणीय ऊर्जा को जीवाश्मीय ऊर्जा स्रोतों का विकल्प बनाने पर उच्च प्राथमिकता से काम हो रहा है। आज भारत की कुल ऊर्जा उत्पादन क्षमता में 36 प्रतिशत अक्षय ऊर्जा की हिस्सेदारी है। बीते छह वर्षों में यह ढाई गुना बढ़ी है और इसमें सोलर की हिस्सेदारी तो 13 गुना तक बढ़ी है। ऊर्जा मंत्री आरके सिंह ने दावा किया है कि 2030 तक भारत में अक्षय ऊर्जा की भागीदारी 40 प्रतिशत और 2035 तक 60 फीसदी होगी। यह आंकड़ा भारत में स्वच्छ ऊर्जा की एक नई क्रांति जैसा ही होगा।

इसे भी पढ़ेंरू भारतीय अर्थव्यवस्था में बहुत तेजी से आ रहे हैं कई सकारात्मक बदलाव

31 अक्टूबर 2020 के आंकड़े अनुसार 373436 मेगावाट के कुल राष्ट्रीय बिजली उत्पादन में नवीकरणीय स्रोतों की भागीदारी 89636 मेगावाट है। मोदी सरकार ने 2022 तक 175 गीगावाट और 2035 तक 450 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन करने का लक्ष्य निर्धारित किया है (एक गीगावाट मतलब 1000 मेगावाट)। सरकार के मिशन मोड़ वाले प्रयासों से छह साल में आया 4.7 लाख करोड़ का निवेश भविष्य के भारत की झलक भी दिखलाता है। गुजरात, मप्र, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, तमिलनाडु, हिमाचल प्रदेश जैसे राज्य अगले कुछ वर्षों में नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र के अग्रणी राज्यों में होंगे क्योंकि इन राज्यों में सोलर क्रांति की जमीन राज्य और निजी निवेशकों के जरिये बहुत ही सुव्यवस्थित तरीके से निर्मित की जा रही है। मप्र के रीवा में बनाये गए अल्ट्रा मेगा पार्क में 700 मेगावाट बिजली का उत्पादन हो रहा है यह एशिया का सबसे बड़ा एकल सोलर पार्क है जिसे दो साल से कम में तैयार किया गया है। रीवा सोलर परियोजना की 26 फीसदी बिजली दिल्ली मैट्रो को दी जाती है। इसी तरह यूपी के मिर्जापुर, गुजरात की कच्छ, धोलेरा, तमिलनाडु की कामुती, राजस्थान की मथानिया, खींवसर और हिमाचल की ऊना, बिलासपुर, कांगड़ा जैसी महत्वपूर्ण सोलर परियोजनाओं के जरिये देश भर में सौर ऊर्जा उत्पादन की स्वर्णिम कहानी इस समय लिखी जा रही है।

अक्षय ऊर्जा के अन्य घटक पवन, बायो, पनबिजली की परियोजनाओं पर मोदी सरकार की प्रामाणिक प्रतिबद्धता से यह स्पष्ट है कि 2035 से पहले भारत नवीकरणीय ऊर्जा के सभी लक्ष्य हासिल कर लेगा।

अक्षय ऊर्जा के जरिये भारत वैश्विक पर्यावरणीय संकट के समाधान में भी निर्णायक भूमिका निभा रहा है। नजीर के तौर पर अकेले रीवा अल्ट्रा मेगा सोलर परियोजना से 15.7 लाख टन कार्बन डाईऑक्साइड का उत्सर्जन रोका गया है। यह धरती पर 2.60 करोड पेड़ लगाने के बराबर है। भारत में नवीकरणीय और नवीन ऊर्जा की अपरिमित सँभावनाए हैं और अगर सब कुछ इसी गति से अमल में लाया जाता है तो भारत 2035 में 450 गीगावाट बिजली उत्पादन के लक्ष्य को समय से पूर्व ही प्राप्त करके पूरी दुनिया में एक मिसाल कायम करेगा। सतत विकास लक्ष्य और पैरिस समझौते के उद्देश्यों को पूरा करने की दिशा में आने वाले समय में भारत विश्व का नेतृत्व करने के लिए ठोस कार्ययोजना पर समयबद्ध तरीके से आगे बढ़ रहा है इसका श्रेय निःसन्देह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को जाता है। मोदी की पहल पर ही फ्रांस के सहयोग से श्अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधनश की नींव रखी गई है जिसके साथ 121 देश एकजुट होकर गैर जीवाश्मीय ऊर्जा स्रोतों के उपयोग पर समवेत हैं।

इसे भी पढ़ेंरू मोदी सरकार आने के बाद भारत में ऊर्जा के क्षेत्र में हुई जोरदार क्रांति

सौर गठबंधन का उद्देश्य 2030 तक विश्व में 1 ट्रिलियन वाट यानी 1000 गीगावाट उत्पादन का लक्ष्य रखा गया है। वस्तुतः जलवायु परिवर्तन के अवश्यंभावी संकट से निबटने के लिए जो प्रतिबद्धता भारत ने व्यक्त की है वह भारत की विश्व दृष्टि की उद्घोषणा का हिस्सा ही है। भारतीय दृष्टि प्रकृति के शोषण के स्थान पर दोहन की हामी है और प्रधानमंत्री मोदी ने जिस प्रभावशाली तरीके से दुनिया के सामने सौर गठबंधन का प्रकल्प खड़ा किया है वह पैरिस समझौते के समानन्तर सही मायनों में भारतीय लोकमंगल की परिकल्पना का ही साकार है। श्अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधनश और इसके उद्देश्य भारत की आत्मनिर्भर अवधारणा का ब्ल्यू प्रिंट भी हैं क्योंकि हमारी अर्थव्यवस्था का जिस अनुपात में आकार बढ़ रहा है उसकी बुनियाद ऊर्जा केंद्रित ही है ऐसे में अक्षय ऊर्जा पर निर्भरता आत्मनिर्भरता की राह भी बनायेगी। भारत में औसतन 300 दिन सूरज प्रखरता के साथ आसमान पर रहता है और हमारे भूभाग पर पांच हजार लाख किलोवाट घण्टा प्रति वर्ग मीटर के बराबर सौर ऊर्जा आती है। एक मेगावाट सौर ऊर्जा के लिए तीन हैक्टेयर समतल भूमि की आवश्यकता होती है। इस लिहाज से भारत के पास इस क्षेत्र में अपरिमित सँभावनाओं का खजाना है।

मोदी सरकार ने इस शाश्वत ऊर्जा भंडार को देश की ऊर्जा आवश्यकताओं से जोड़कर जो लक्ष्य तय किये हैं वह एक सपने को साकार करने जैसा ही है। प्रधानमंत्री इसे श्योर, प्योर और सिक्योर कहते हैं क्योंकि सूरज सदैव चमकना है, इससे उत्पादित ऊर्जा पूरी तरह स्वच्छ है, यह हमारी जरूरतों को पूरी करने में सुरक्षित है। इस त्रिसूत्रीय फार्मूले पर केवल भाषणों में काम नहीं हुआ बल्कि पहली बार धरातल पर परिवर्तन की इबारत लिखी जा रही है। 2016 में पवन ऊर्जा की प्रति यूनिट लागत 4.18 रुपए थी जो 2019 में 2.43 हो गई। 4.43 की दर वाली सौर यूनिट 2.24 रुपये पर आ गई है। 2013 में नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन 34000 मेगावाट था जो आज 89636 पर आ चुका है। पूरी दुनिया में भारत तीसरा शीर्ष नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादक देश है। 2030 तक भारत में जीवाश्मीय ऊर्जा खपत काफी कम होने का अनुमान है जो जलवायु परिवर्तन के लिए कार्बन उत्सर्जन की बुनियादी आवश्यकता को पूरा करने वाला सबसे बड़ा कारक है।

प्रधानमंत्री मोदी ने आत्मनिर्भरता के मोर्चे पर भी बड़े बुनियादी कदम उठाए हैं क्योंकि यह तथ्य है कि नवीकरणीय ऊर्जा के 80 फीसदी उपकरण हमें चीन से मंगाने पड़ते हैं। सौर ऊर्जा के सस्ते मॉड्यूल से भारतीय बाजार पटे हुए हैं। चीन में विभिन्न उपकरण निर्माता कम्पनियों ने 39 हजार 784 आइटम के पेटेंट करा रखे हैं वहीं भारत में इनकी संख्या केवल 246 ही है। मोदी सरकार ने राष्ट्रीय सोलर मिशन लागू कर स्वदेशी कम्पनियों को आगे बढ़ाने वाले आर्थिक एवं नीतिगत पैकेज पर काम आरम्भ किया है। सरकार का दावा है कि उसकी नीतियों के चलते सोलर मॉड्यूल और पैनल विनिर्माण क्षेत्र में 2030 तक भारत आत्मनिर्भरता को हासिल कर लेगा और इस दौरान 42 अरब डॉलर के आयात चीन से नहीं करने पड़ेंगे। भारत का अब तक का सबसे बड़ा सोलर सेल परियोजना ठेका हासिल करने वाले गौतम अडानी का कहना है कि अगले 4 से 5 साल में भारत के नवीकरणीय ऊर्जा बाजार से हम चीन को बाहर कर देंगे। यह स्थिति समेकित रूप से भारतीयों को रोजगार से जोड़ने के साथ ऊर्जा आत्मनिर्भरता के बड़े लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक है। एक अनुमान के अनुसार 2035 तक भारत में ऊर्जा की मांग 4.2 प्रति वर्ष की दर से बढ़ेगी जो पूरी दुनिया में सबसे तेज होगी। विश्व के ऊर्जा बाजार में 2016 में भारत की मांग पांच प्रतिशत थी जो 2040 में 11 फीसदी होने का अनुमान है। इन तथ्यों से समझा जा सकता है कि मोदी सरकार ने दूरदर्शिता के साथ भारत की आर्थिकी को मजबूत धरातल देने का कितना महत्वपूर्ण काम अपने हाथ में ले रखा है।

सिर्फ बच्चों के ही नहीं, बड़ों के भी बेहद काम आती है रबर, जानिए इसके कुछ अनोखे इस्तेमाल

जब एक बच्चा पढ़ना शुरू करता है, तभी से वह रबर का इस्तेमाल करना शुरू कर देता है। आमतौर पर पेंसिल से लिखते समय जब कुछ गड़बड़ हो जाती है तो उसे मिटाने में रबर बेहद काम आती है। आमतौर पर हर बच्चे के पेंसिल बॉक्स में रबर मिल ही जाएगी। वैसे तो लोग इसे बेहद मामूली समझते हैं, लेकिन वास्तव में यह बेहद काम की चीज है। रबर सिर्फ बच्चों के लिए ही यूजफुल नहीं है। अगर आप चाहें तो इस मामूली सी समझी जाने वाली रबर की मदद से अपनी कई प्रॉब्लम्स को आसानी से सॉल्व कर सकते है। तो चलिए आज हम आपको रबर के कुछ अनोखे इस्तेमाल के बारे में बता रहे हैं

फ्रेम को स्टेबलाइज

कई बार ऐसा होता है कि दीवार पर पिक्चर फ्रेम लटकाते समय वह एक साइड से स्लिप होता है। ऐसे में आप रबर का इस्तेमाल करें। बस ग्लू की मदद से बेहद स्मॉल साइज के रबर को फ्रेम के चारों ओर चिपकाएं। इसके बाद आप फ्रेम को दीवार पर टांगे। अब आपका फ्रेम स्टेबलाइज हो जाएगा और वह बार–बार स्लिप नहीं होगा।

हटाएं स्टिकर के निशान

जब भी जब हम किसी चीज से स्टिकर को हटाती हैं तो कई बार वह पूरी तरह से नहीं हटता या फिर स्टिकर रिमूव होने के बाद भी उसका निशान व चिपचिपाहट उस पर रह जाती है। ऐसे में आप स्टिकर के निशान हटाने के लिए रबर की मदद लें। बस आप उसे उस जगह पर रब करें। यह स्टिकर को पूरी तरह से हटाने में मदद करेगा।

बनाएं ईयररिंग होल्डर

रबर का यह इस्तेमाल हर महिला को बेहद पसंद आएगा। कई बार ऐसा होता है कि आपके फेवरिट स्टड खो जाते हैं, क्योंकि वह साइज में बेहद छोटे होते हैं और ईयररिंग्स के पेयर में से एक भी खो जाए तो भी वह खराब हो जाता है। ऐसे में आप रबर को बतौर ईयररिंग होल्डर इस्तेमाल करें। इसके बाद आप अपने ईयररिंग्स की अच्छी तरह देखभाल कर पाएंगी।

पिन होल्डर

ईयररिंग्स की तरह ही आप रबर को बतौर पिन होल्डर भी इस्तेमाल कर सकती हैं। अगर आप स्टिचिंग आदि कर रही हैं तो ऐसे में अपनी सुई को खोने से बचाने के लिए आप रबर के ऊपर इसे होल्ड करें। इससे किसी को चोट नहीं लगेगी और वह आपके सोफे या गद्दे पर खोएगी नहीं।

एचटीएमएल, सीएसएस की जानकारी

इसे फ्रंट एंड कोडिंग भी बोल सकते हैं। मतलब सामने वेबसाइट जो दिखती है, उसकी कोडिंग। ब्राउजर में जब आप कोई भी यूआरएल डालते हैं, तो जो फ्रंट एंड नजर आता है वह एचटीएमएल पर चलता है। एचटीएमएल मतलब हाइपरटेक्स्ट मार्कअप लैंग्वेज। इसके कई वर्जन आ चुके हैं और हाल–फिलहाल एचटीएमएल– 5 पर कार्य हो रहा है।

इसी प्रकार एचटीएमएल को खूबसूरत बनाने का काम करती है स्टाइलशीट जिसको सीएसएस (कैस्केडिंग स्टाइल शीट) बोलते हैं। यह दोनों कोडिंग लैंग्वेज ही होती हैं और इन्हें आप एक तरह से स्क्रिप्टिंग भी बोल सकते हैं।

वेबसाइट डिजाइन

करने में जावास्क्रिप्ट भी यूज होती है, जो खासकर इवेंट के लिए प्रयोग की जाती है। जैसे माउस क्लिक करने पर क्या एक्शन होना चाहिए, माउस रोलओवर करने पर क्या एक्शन होना चाहिए, स्क्रोलिंग पर क्या एक्शन होना चाहिए, यह कार्य जावास्क्रिप्ट करती है।

इसकी जानकारी आपको एचटीएमएल, सीएसएस, जावास्क्रिप्ट में मिलती है। सामान्य तौर पर इसे आसान कोडिंग लैंग्वेज कहा जाता है और आप इसमें भी महारत हासिल कर सकते हैं।

कोडिंग जोन

यह ऐसा क्षेत्र है जो असली प्रोग्रामिंग की दुनिया में बदलाव लाता है। एक सामान्य वेबसाइट और गूगल में क्या अंतर है यह डिफाइन करता है कि इसमें कोडिंग किस स्तर की हुई है?

एक सामान्य एचटीएमएल वेबसाइट और फेसबुक में क्या अंतर है, एक सामान्य वेबसाइट और अमेजन में क्या अंतर है, यह कोडिंग डिसाइड करती है। कहने का तात्पर्य यह है कि मनुष्य ऊपर से जैसा भी दिखता हो, किंतु उसके मस्तिष्क में कितनी नसें हैं, ब्लड सर्कुलेशन किस प्रकार होता है यह आप प्रोग्रामिंग समझ सकते हैं।

कोडिंग लैंग्वेज किसी भी वेबसाइट को नियंत्रित करती है। वह वेबसाइट चाहते गूगल जैसा कोई सर्च इंजन हो, फेसबुक जैसा कोई सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म हो या फिर फ्लिपकार्ट जैसी कोई शॉपिंग वेबसाइट हो, कोडिंग ही यह तमाम चीजें तय करती है।

इसमें पीएचपी से लेकर जावा और एएसपी से लेकर पाइथन और सी प्लस प्लस जैसी हेवी लैंग्वेज होती हैं, जिसके ऊपर कोई भी फंक्शन कार्य करता है। इसमें अगर आप महारत हासिल करते हैं, तो वेबसाइट में बड़ी–बड़ी फंक्शनैलिटी ऐड कर सकते हैं, नयी खोज कर सकते हैं।

कॅरियर की बात करें तो, गूगल–फेसबुक जैसी बड़ी कंपनियों में इंजीनियर के पद पर आप मोटी सैलरी भी उठा सकते हैं या फिर अपना कोई स्टार्टअप शुरू कर सकते हैं।

वेब कंसलटेंसी

अगर आप ऊपर में से तीन चीजों में से कुछ नहीं करते हैं तो भी आपको निराश होने की जरूरत नहीं है। आप तमाम सीएमएस में से किसी एक सीएमएस में महारत हासिल करके लोगों को कंसल्टेंसी दे सकते हैं। बहुत सारी ऐसी कंपनियां हैं जो ड्रैग एंड ड्रॉप पर चलती हैं, किंतु लोगों को उसकी जानकारी नहीं होती है।

जैसे वर्डप्रेस, ब्लॉगर, टंबलर इत्यादि।

तो किस प्रकार से कोई वेबसाइट बनती है, कार्य करती है, आपको इसकी जानकारी देनी होती है, जो सामान्यतः उसके ट्यूटोरियल में दिया भी होता है। इसे आप यूट्यूब से भी स्टेप बाय स्टेप सीख सकते हैं और अच्छा खासा पैसा भी कमा सकते हैं।

ऊपर की चीजें ऐसी हैं जो आप फुल टाइम कर सकते हैं और अच्छी खासी अर्निंग कर सकते हैं। इसके साथ ही आपको डोमेन, होस्टिंग की भी जानकारी रखनी होती है, क्योंकि अगर आप यह कार्य करते हैं तो फिर एक संपूर्ण पैकेज के तौर पर अपने कॅरियर में चार चांद लगा सकते हैं।

Vol. 15 **No.** 10
RNI No.: DEL/BIL/2004/14598
Publisher: Ram Kailsah Gupta on behalf of Tecnia Institute of Advanced Studies, 3 PSP, Madhuban Chowk, Rohini, Delhi-85; **Printer:** Ramesh Chander Dogra; **Printed at:** Dogra Printing Press, 17/69, Jhan Singh Nagar, Anand Parbat, New Delhi-5
Editor: Rahul Mittal,Bal Krishna Mishra responsible for selection of News under PRB Act. All rights reserved.

IMPORTANT QUOTES

"I do not consider it an insult, but rather a compliment to be called an agnostic. I do not pretend to know where many ignorant men are sure -- that is all that agnosticism means."

- Clarence Darrow

*****

"Obstacles are those frightful things you see when you take your eyes off your goal."

- Henry Ford

*****

"I'll sleep when I'm dead."

- Warren Zevon

*****

"There are people in the world so hungry, that God cannot appear to them except in the form of bread."

- Mahatma Gandhi

*****

Compilation:
Priya Kumari

WINNERS v/s LOOSERS Part-90

Winner says "Let me do it for you";

Loser says "That is not my job".

*****

Winners say "I must do something";

Losers say "Something must be done".

*****

Winner is always a part of the answer;

Loser is always a part of the problem.

*****

Winner sees an answer for every problem;

Loser sees a problem for every answer.

*****

To Be Continued In Next Issue-

Compilation:
Rahul Mittal

All Students and Faculty are welcome to give any Article, Feature & Write-up along with their Views & Feedback at: **youngstertias@gmail.com**